पक्षी मार्गदर्शिका

दुर्ग वनमंडल (छ.ग.)

मधुबाज़

मधुबाज़ हमारे देश का निवासी पक्षी है, देह व समूची चोंच के शल्कसम पर से ढके होने के कारण यह पक्षी मधु के छत्तों पर आक्रमण कर वहां से मधु खाने हेतु प्रकृति द्वारा अनुकूलित है और यही वजह है कि इसका नाम मधुबाज़ पड़ा है।

ORIENTAL HONEY BUZZARD

मधुबाज़ लगभग 28 इंच का शिकारी पक्षी है जो आकाश में ऊंचाई पर चक्कर लगाता हुआ या किसी वृक्ष की ऊंची शाखा पर बैठा दिखाई पड़ सकता है। इसका भोजन मुख्यतः मधु, मधुमक्खियां एवं उनके अंडे, लार्वा, कीड़े मकौड़े, कभी कभी छोटे पक्षी, मेढ़क, सरीसृप आदि हैं।

ग्रे हेरॉन, खैरा बगुला, काबुड, सैन, अंजक बक

इस पक्षी के शिकार करने का अंदाज बहुत अनोखा है, सबसे पहले यह पानी के अंदर से मछली को बाहर लाता है, इसके बाद चोंच मारकर उसे घायल कर देता है फिर हवा में उछालकर उसे हजम कर लेता है।

GREY HERON

यह सिलेटी व सफेद रंग के होते है, जो अन्य सभी बगुलों से बड़े होते है, यह हमारे देश के बारहमासी पक्षी है जो हर तरह के जलाशयों में देखे जा सकते हैं।

शिकरा

शिकरा शब्द का मतलब हिंदी भाषा में शिकारी होता है,

इसका यह नाम इसके बड़े पक्षियों जैसे कौंवें, चकोर आदि का शिकार करने के कारण पड़ा है।

SHIKRA

इस पक्षी को दिमाग और बहादुरी का भी प्रतीक माना गया है, इसी के नाम पर 2009 में भारतीय नौसेना के एक हेलीकाप्टर बेस का नाम आईएनएस शिकरा भी रखा गया था। यह पक्षी दिन के दौरान ही सक्रिय होते है, जहां ये ज्यादातर समय हवा में चक्कर लगाकर उड़ते ही रहते हैं। आईयूसीएन द्वारा शिकरा को सबसे कम चिंताजनक जीव की श्रेणी में रखा है।

वाइट ब्रोवड फैनटेल

जब यह पक्षी अपनी पूंछ फैलता है तो एक पंख की भांति दिखाई देता है, इसी कारण इसका नाम फैनटेल पड़ा है।

WHITE-BROWED FANTAIL

फैनटेल पक्षी दो तरह की आवाजें निकालते है, जब यह कोई खतरा महसूस करते है तो तीखी आवाजें निकालते है, लेकिन जब ये खुश होते है तो इनकी आवाज काफी मधुर होती है, इस आवाज को मधुरता से कोई भी व्यक्ति इनकी ओर आकर्षित हो सकता है।

DurgForest

कचाटोर, श्वेत बाज़

इसके नाम के अनुसार कच अर्थात केश या सर पर किसी प्रकार का विशेष चिन्ह, सफेद रंग के इस पक्षी का गले के ऊपर काला शिरोभाग ऐसा प्रतीत होता है मानों आग से झौंसाया हुआ सर लिए भटक रहा हो।

BLACK-HEADED IBIS

यह एक 30 इंच का बड़ा पक्षी है जिसे लंबी, काली, टेढ़ी व झुकी हुई चोंच के कारण जाना जाता है। इसका भोजन कीड़े मकौड़े, छोटे केंकड़े, झींगे, मेंढक, घोंघे और यदा-कदा जलीय सर्प भी इसके भोजन बन जाते है।

गजपाँव, लमगोड़

इस पक्षी गंदे पानी का सूचक माना जाता है, यह केवल गंदे पानी से कीड़े मकौड़े खाता है। इन पक्षियों की टांगे इनके शरीर के अनुपात में सबसे ज्यादा लंबी होती है।

BLACK-WINGED STILT

यह पक्षी झुंड में दिखाई देते है, यह जाड़े की शुरुआत में सबसे पहले आते है तथा सबसे बाद में वापस जाने वाले पक्षियों में से एक है।

EURASIAN CRANE

यह पक्षी लंबी टांगें व लंबी गर्दन व भूरे से सफेद रंग में पाया जाता है।साथ ही गर्दन व गला गहरे स्लेटी रंग का होता है। यह एक सर्वभक्षी पक्षी है। जो ज्यादातर पानी में चलना व रहना पसंद करते है तथा पानी के व उसके आसपास रहने वाली चीजों को अपना खाना बनाते हैं।

लाल मुनिया

STRAWBERRY FINCH

यह प्रजाति हमारे राज्य व देश में विलुप्ति के कागार पर है, जानकारी के अनुसार इसका मुख्यतः आवास रीफ नामक घास है, जिसका उपयोग हमारे देश मे लोग मकान के ऊपर कच्ची छत को छाने में करते है। यही कारण है कि इनकी संख्या में निरन्तर कमी होती जा रही है, इसे रेड, अवडावत, रक्त पुत्री व लालमुनी चिरई के नाम से भी जाना जाता है।

DurgForest

डबचीक, पनडुब्बी

ये जलीय जीव पानी मे बड़े आराम से तैरते है लेकिन जैसे ही किसी भी दूसरे जीव (मनुष्य, अन्य जीवों) को देखते है तो पानी के अंदर तेजी से चले जाते है या डुबकी लगाकर काफी दूर चले जाते है। इनकी इसी खासियत के कारण इनका नाम पनडुब्बी पड़ा है।

LITTLE GREBE

यह पक्षी आसानी से जमीन पर चल नहीं पाते इसलिए ज्यादातर समय पानी में ही रहते हैं। लेकिन जब झील व तालाबो का पानी सूख जाता है तब इन्हें नई जगहों के लिए उड़ान भरनी पड़ती है। जब यह अपने चूजों को पहली बार पानी में उतारते हैं तो अपनी पीठ पर बैठा कर पानी में तैरते हैं देखने में यह दृश्य काफी मनमोहक होता है।

सारस क्रेन

भारत में सारस क्रेन को दाम्पत्य प्रेम का प्रतीक माना जाता है, यह पूरे जीवन एक ही बार जोड़ा बनाता है और पूरा जीवन उसी के साथ बिताता है। एक कि मृत्यु के पश्चात दूसरा भी अपने प्राण छोड़ देता है।

SARUS CRANE

यह दुनिया का सबसे ऊंचे कद का उड़ने वाला पक्षी है, इसका औसत जीवनकाल 15 से 18 वर्ष का होता है। इनकी टांगे काफी लंबी और मजबूत होती है साथ ही ये आसमान में 40 हजार फीट तक ऊपर उड़ सकता है।

DurgForest

लालसर

बतखों की यह प्रजाति ज्यादातर पानी या
पानी के आसपास ही दिखाई देती है,
यह पक्षी सर्दी बिताने हमारे देश में आते है।

RED-CRESTED POCHARD

रेड क्रेस्टेड पोचार्ड को हिंदी भाषा में लाल चोंच व लाल सर वाली बत्तख के नाम से भी जाना जाता है। भारत में यह एक प्रवासी पक्षी है, जो सर्दियों में आते है। अपने प्रवास के दौरान ये एक समूह में रहती है तथा अन्य प्रवासी बत्तखों के साथ इकट्ठी रहती है।

सींखपर

इनकी विशेषता **48 मील प्रति घंटा** की उड़ान करना है,
1 बार में यह **1800 मील** तक उड़ान भरने की क्षमता रखता है।

NORTHERN PINTAIL

यूरोप से प्रवास कर यहां आने वाले इस पक्षी को सींखपर नाम उसकी सुई जैसी तीखी पूंछ के कारण मिला। यह हमारे देश में सबसे अधिक तादाद में पहुँचने वाले प्रवासी पक्षियों में से एक है।

बार हेडेड गुज

यह ऐसी प्रजाति का परिंदा है जो माउंट एवरेस्ट यानी 30 हजार फीट से ज्यादा ऊंची उड़ान भर सकता है।

न ही इसे ऊंचाई में कम तापमान से दिक्कत होती है और न ही ठंड से!

BAR-HEADED GOOSE

धरती से करीब 29000 फ़ीट की ऊँचाई तक उड़ने की क्षमता रखने वाले यह पक्षी तिब्बत, कजाकिस्तान, रूस, मंगोलिया से छत्तीसगढ़ के अलग अलग हिस्सों में पहुँचते है। आसमान से यह पक्षी जब कलाबाजी करता हुआ पानी में उतरता है तो नजारा देखने लायक रहता है। यह नजारा आप गिधवा-परसदा और बेलौदी डैम में देख सकते है।

नीलसर, निरागी, निराजी, निलरुगी, हिरागी

नीलसर अपने नाम के अनुरूप ही नीले सिर वाली एक सुंदर बत्तख है, यह मुख्य तौर पर शीत ऋतु का प्रवासी पक्षी है, जिसका प्रवासकाल लगभग अक्टूबर से आरंभ होकर मार्च के अंतिम सप्ताह तक होता है।

MALLARD

यह वेटलैंड के सबसे सुंदर पक्षियों में से एक है, यह प्रवासी जंगली मध्यम आकार का बत्तख है जो कि 6400 मीटर की ऊंचाई तक उड़ान भर सकता है। मलार्ड साफ पानी व नमक के पानी वाली झीलों, जोहड़ों, नदियों, दलदली क्षेत्रों व समुद्र के किनारे रहना पसंद करते हैं।

जेट फाइटर - बार टेल्ड गॉडविट

ने नॉन-स्टॉप बर्ड फ्लाइट का विश्व रिकॉर्ड बनाया है, इसने अपनी ही प्रजाति के नर गॉडविट के पिछले रिकॉर्ड 13000 किमी को तोड़ते हुए उत्तर-पूर्व तस्मानिया में एंसन्स बे को छूने से पहले 13560 किमी की उड़ान भरी।

BAR TAILED GODWIT

'जेट फाइटर' बार टेल्ड गॉडविट ने नॉन-स्टॉप बर्ड फ्लाइट का विश्व रिकॉर्ड बनाया है, इसने अपनी ही प्रजाति के नर गॉडविट के पिछले रिकॉर्ड 13000 किमी को तोड़ते हुए उत्तर-पूर्व तस्मानिया में एंसन्स बे को छूने से पहले 13560 किमी की उड़ान भरी।

DurgForest

LESSER WHISTLING DUCK

जब यह पक्षी उड़ते हैं तो एक खास प्रकार की सीटी जैसी आवाज निकालते है। जिस कारण इसका नाम व्हिसलिंग डक पड़ा है।

ब्राम्हणी बतख, सुर्खाब, चकवा-चकवी

यह एक प्रवासी प्रक्षी है जो भारत में अलग-अलग हिस्सो में सर्दियों में प्रवास करके आते है। बुद्ध धर्म में इस पक्षी को पवित्र माना जाता है।

RUDDY SHELDUCK

अंग्रेजों ने इसके भगवा रंग के कारण इसका नाम ब्राह्मणी डक रख दिया था। इनका आगमन सितंबर के अंत या अक्टूबर में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज होती है। ये पक्षी पानी के अंदर गर्दन डालकर और पैर ऊपर कर शिकार करता है। ये सर्वाहारी होते हैं। जो घास, छोटे अंकुर, छोटे पौधे, अनाज तथा कीट पतंगे खा लेता है

कोयल

कोयल अपनी मीठी आवाज के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है, परन्तु क्या आप जानते है ये आवाज नर कोयले की रहती है, न कि मादा कोयल की।

INDIAN CUCKOO

कोयल की आवाज जितनी मधुर होती है उतनी ही ज्यादा ये चालक होती है, अन्य पक्षियों की भांति अंडा देने का समय निकट आने पर कोयल घोसला बनाने की चिंता नहीं करती, यह अपने अंडे दूसरे पक्षियों के घोसलों में देते हैं व उनके अंडों को मारकर खा लेते है। ऐसे में वह अपने अंडों को सेने का काम खुद न कर दूसरे पक्षियों से करवाती है।

सितकंठ

इसे सितकंठ या हाजी लक लक भी कहा जाता है, इन पक्षियों का खेत के साथ नाजुक रिश्ता होता है, और उनके जिंदा रहने में खेतों के बीच खड़े पेड़ों की अहम भूमिका होती है।

WOOLLY-NECKED STORK

वूली नेक्ड स्टॉर्क : सफेद पंखों से सजी असाधारण गर्दन, बैंगनी-धारीदार पंख, और लाल रंग की चोंच, इस लम्बे पक्षी की पहचान ऊनी गर्दन वाले सारस के रूप में की जाती हैं, यह भारत की एक मूल प्रजाति है जो कि अपने असामान्य पंख और ऊंचाई के लिए जानी जाती है।

लाल अंजन

अंधेरे में भी शिकार ढूंढ लेने वाले इस पक्षी को **लाल अंजन** के नाम से जाना जाता है। इन पक्षियों की उड़ान धीमी व औसत आयु 20 वर्ष होती है।

PURPLE HERON

लाल अंजन (परपल हेरॉन) : इन पक्षियों के सिर का रंग भूरा लाल, गर्दन पर लंबी काली धारियां, पंख के शुरुआती हिस्से स्लेटी रंग, पेट व अंदर की तरफ के पंख बादामी लाल रंग, चोंच पीले भूरे रंग की, पांव भूरे रंग के और आंखें पीले रंग की होती है। ये मुख्यत दलदली क्षेत्रों, धान के खेतों, झीलों व जोहड़ों के किनारे मिलते है। पानी के किनारे ये गहरी वनस्पति में रहना ज्यादा पसंद करते हैं। पानी के किनारे वनस्पति में छुप कर बिना किसी हलचल के काफी समय तक एक ही स्थिति में खड़े रहकर शिकार का इंतजार करते है। जैसे ही शिकार इनके पास आती है ये तुरंत अपनी लंबी चोंच से उसे उठा लेते हैं। ये शिकार को सीधा निगल जाते हैं। ये पक्षी सुबह व शाम हल्का अंधेरा रहने के समय भोजन करते है। इनका पंजा काफी चौड़ा होता है, जिसके कारण ये पानी पर तैर रही वनस्पति पर आसानी से चल लेते हैं।

DurgForest

गाय बगुला

जब मवेशी चलते हैं तो उनके खुर से मिट्टी के दबने से कीड़े बाहर निकलने लगते हैं, जो इनका आहार होता है, साथ ही मवेशियों के शरीर पर पलने वाले परजीवी कीटों को भी वे अपना आहार बनाते हैं, इसीलिए ये भैंस और गाय की पीठ पर आमतौर पर दिखाई देते है।

CATTLE EGRET

बगुले की गिनती चालाक पक्षियों में होती है, यह बड़ी ही चालाकी से पानी में मछलियों को अपना शिकार बनाता है। यह पानी में काफ़ी देर तक बिना हिले-डुले सीधा खड़ा रहता है। यही कारण है कि इसे 'ध्यानस्थ योगी' कहा जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार बगुले के संबंध में कहा जाता है कि ये जिस भी घर के पास के किसी वृक्ष आदि पर रहते हैं वहां शांति रहती है और किसी प्रकार की अकाल मृत्यु नहीं होती।

फिजेंट-टेल्ड जैकाना

इनके शरीर का रंग जून व सितंबर के बीच बदल जाता है,
अपने लंबे पांव व पंजों के कारण ये पानी के ऊपर तैर रही वनस्पति
के ऊपर आसानी से चल सकते है साथ ही पानी में तैर भी सकते है।

PHEASANT-TAILED JACANA

फिजेंट टेल्ड जैकाना : ये पक्षी पानी में चलने और तैरने दोनों के लिए माहिर है। देखने में नर व मादा दोनों एक ही सामान दिखाई देते है लेकिन आकार और वजन में मादा नर से थोड़ी बड़ी होती है। इनके पंजे मकड़ी के पंजों की तरह लंबे होते है जिनका गर्मियों में रंग धुंधला हरा व सर्दियों में हल्का पीला हो जाता है।

पतेना पक्षी

इसे **हरियल** नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इसका रंग बिलकुल हरी घास की तरह चमकता हुआ दिखाई देता है। इसकी लंबी, पतली और मुड़ी हुई चोंच इसे खास बनाती है, जिससे इसे कीड़े पकड़ने में आसानी होती है।

GREEN BEE EATER

पतेना पक्षी का वैज्ञानिक नाम मेरोप्स ओरिएंटलिस है, यह एक मध्यम कद का पक्षी है जिसकी सुंदरता लोगों को उसकी ओर आकर्षित करती है। यह पक्षी दिन के दौरान सक्रिय होते है और रात के समय आराम करते पाए जाते है। इनका भोजन छोटे छोटे किटक, तितलियाँ और मधुमखियाँ आदि अपने भोजन में लेता है।

नीलकंठ पक्षी

इसके सर और पंख का रंग नीला होने के कारण इसे नीलकंठ कहा जाता है, उड़ते वक्त 360 डिग्री भी घूम जाना व हवा में आकर्षक करतब दिखाना ही इसे दूसरे पक्षियों से अलग बनाता है।

INDIAN ROLLER BIRD

मान्यताओं के अनुसार दशहरे पर नीलकंठ देखा जाना, सौभाग्य में वृद्धिकारक है। किसान की फसल सुरक्षा में कीट, पतंगे, छोटे सांप और चूहे भी पकड़ कर खाता है। छतीसगढ़ में इंडियन रोलर आसानी से देखा जा सकता है, जबकि कुछ प्रदेश में यह दुर्लभ है। इस खूबसूरत पक्षी को आप तालपुरी जैव विविधता पार्क (दुर्ग वनमंडल के अंतर्गत) में देख सकते हैं।

COPPERSMITH BARBET

छोटा बसंता की आवाज़ बहुत मीठी होती है जिसे सुनने पर ऐसा लगता है जैसे कोई ठठेरा अपना कार्य कर रहा हो, इसीलिए इसे ठठेरा भी कहते हैं। Coppersmithbarbet की मीठी आवाज़ आप तालपुरी जैव विविधता पार्क (दुर्ग वनमंडल के अंतर्गत) में सुन सकते हैं।

DurgForest

गढ़वाल बत्तख

GADWALL DUCK

**यह पक्षी सर्दियां बिताने यहाँ आते है,
गढ़वाल बत्तख की प्रजातियां आद्रभूमि,
घास के मैदान व धीमी गति से बहने
वाले पानी में निवास करती है।**

भारतीय सुनहरा ओरियल पक्षी

इस पक्षी की खासियत इसका सुनहरा रंग है
जो लोगों को इसकी ओर आकर्षित करता है।
यह पक्षी प्रायः 4-6 के झुंड में दिखाई देते हैं
व एक शाखा से दूसरी शाखा में फुदकते रहते हैं।

INDIAN GOLDEN ORIOLE

भारतीय सुनहरा ओरियल पक्षी एक बहुत ही सुंदर गहरे पीले रंग का पक्षी होता है, इसका वैज्ञानिक नाम Oriolus kundoo है। यह ओरियल पक्षी की ही एक प्रजाति है। भारतीय पक्षी के पंखों का रंग ज्यादा गहरा पीला होता है। भारतीय सुनहरा ओरियल पक्षी संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है। यह बलूचिस्तान, पाकिस्तान और हिमालय के आसपास के क्षेत्रों में पाया जाता है। सर्दियों के मौसम में दक्षिण भारत की ओर प्रवास कर जाते हैं। कुछ सुनहरे ओरियल पक्षी तो श्रीलंका तक उड़कर प्रवास करते हैं। कुछ सुनहरे भारतीय ओरियल पक्षी मालद्वीप और अंडमान निकोबार दीप समूह में भी देखे गए हैं।क्या आप इस खूबसूरत पक्षी को देखना चाहते हैं? तो चले आईये तालपुरी जैव विविधता पार्क।

चितला कौड़ियाल

मैना के समान कद काठी वाले इस पक्षी की खासियत इसका पानी के ऊपर उड़ते हुए ताक लगाकर मछलियों का शिकार करना है।

PEID KINGFISHER

चितला कौडियाल झील, नदी, नाले और समुद्र के तट आदि जल स्त्रोतों के निकट वृक्षों पर पानी के ऊपर प्लवन करती शाखाओं पर बैठा दिखाई पड़ सकता है जहाँ यह आखेट पश्चात विश्राम करता है या जल सतह पर मज्जन कर मछली पकड़ते देखा जा सकता है। यह यहाँ की स्थाई चिड़िया है जो पूरे भारत में 2500 फीट की ऊँचाई तक पाई जाती है और देश से बाहर प्रवास नहीं करती।

लौह बतख

FERRUGINOUS DUCK

इन बतखों का नाम फेरुगिनस या लौह बतख
इनके लोहे के समान दिखने के कारण पड़ा है।
इनका जीवनकाल 10-12 वर्षों का होता है।

DurgForest

रफ

इन पक्षियों की खासियत इनका बड़े झुंड में रहना है, साथ ही यह पक्षी अपनी मिलनसार प्रवृत्ति के लिए जाने जाते हैं।

RUFF

रफ गीले घास के मैदान और नरम मिट्टी में खाने योग्य वस्तुओं की तलाश करता है, इसका मुख्यतः भोजन छोटे कीड़ें मकौड़े है, लेकिन यह प्रवास और सर्दियों में चावल और मक्का सहित पौधों की सामग्री का उपभोग करते है।

DurgForest

निल कट कटिया

यह एक साहसी, निडर, सुंदर व चंचल पक्षी है जिसका रंग नीलप्रस्तर समान कांतिमान एवं नर की आंखों से चोंच तक काला गंड होता है।

VERDITER FLYCATCHER

निलकटकटिया हिमालय पर 4000 से 10000 फुट की ऊंचाई तक पाई जाती है तथा जाड़े के दिनों में यह पहाड़ों से उतरकर पूरे भारत के मैदानों में देखी जा सकती है। इसे जंगलों में ऊंचे पेड़ों पर रहना ज्यादा प्रिय है, जहां इसे अपने बैठने के स्थान से कीट पतंगों को पकड़ते हुए देखा जा सकता है।

ओरिएंटल डार्टर
(अनहिंगा मेलानोगास्टर)

एक दक्षिण एशियाई और दक्षिण पूर्व एशियाई जल पक्षी है।
इसकी एक लंबी, पतली गर्दन और एक सीधी, तेज चोंच होती है।
यह पानी के नीचे से मछली को थपथपा कर सतह पर लाता है, इसके बाद बाजीगरी करते हुए उछालता है और फिर उसका सिर निगल लेता है।

ORIENTAL DARTER

ओरिएंटल डार्टर का शरीर तैरते समय जलमग्न रहता है, केवल पतली गर्दन को पानी के ऊपर खुला छोड़ देता है, इस कारण इसे स्नेकबर्ड उपनाम दिया गया है। इसमें जलकाग की तरह नम पंख होते हैं और इसे अक्सर एक चट्टान या टहनी पर आराम करते हुए देखा जाता है, जहां पंख सूखने के लिए खुले होते हैं।

कॉमन कैस्ट्रेल
(युरेशियन कैस्ट्रेल)

हिंदी भाषा में नर प्रजाति को सामान्य खेरमुतिया व मादा को नजरी कहते है। मादा पक्षी 3 से 6 अंडे देती है, नर व मादा दोनों मिलकर चूजों को पालते है, जन्म के पहले वर्ष में केवल 30-40% तक ही चुजे बच पाते हैं।

COMMON KESTREL

इस पक्षी का मुख्य भोजन खेतों में पाए जाने वाले चूहें, छिपकलियां, अन्य बड़े कीट, मेंढक व छोटे पक्षी होते हैं। इसका शिकार करने का तरीका बड़ा ही अदभूत होता है। ये आसमान से उड़ते हुए जमीन पर स्कैन करते हैं। इनकी दृष्टि काफी तेज होती है। ये पैराबैंगनी किरणों की चमक को भी पहचान लेते हैं। जब कोई चूहा अपने बिल में घुसा रहता है तो उसके बिल से बाहर पड़े मल-मूत्र में पैराबैंगनी चमक होती है।

DurgForest

कलहंस, कालौक

ये हंस जैसे बड़े आकार के बतख है जो प्रायः 40-50 के समूहों में हमारे देश में आते है, कभी कभी 1-2 के समूहों में भी दिख जाते है।

GREYLAG GOOSE

यह हमारे देश के ऋतु प्रवासी पक्षी है जो अन्य बत्तखों की भांति शीत ऋतु आरंभ होने पर यहां आते है, ऋतु प्रवासी पक्षी होने के कारण ये भारत में अंडे नहीं देते, यहां का प्रवास पूर्ण कर अपने मूल स्थान लौट कर ही पानी या किसी लघुद्वीप पर बड़ी घांस के बीच ही सुंदर तृणनीड़ बनाते है।

पहाड़ी तोता, हिरामन सुग्गा

इस तोते का नाम एलेग्जेंड्रिन सिकन्दर (एलेग्जेंडर दी ग्रेट) के नाम पर पड़ा, अपने विजय अभियान के समय सिकन्दर पंजाब में इन तोतों को पकड़कर यूरोपीय देशों में ले गया, हमारे देश और पड़ोसी देशों में भी यह वृहद स्तर पर पाला जाता है, यही एक मात्र कारण है इनकी जनसंख्या ह्रास का!

ALEXANDRINE PARAKEET

यह पक्षी अन्य पक्षियों की तुलना हमारे सबसे करीब है क्योंकि यही तो एकमात्र है जो हमसे बात कर सकता है, हमारी भाषा समझ सकता है इसलिए इसे बुद्धिमान पक्षी भी माना जाता है।

भृंगराज

यह पक्षी पूंछ के लंबे परों के कारण विशिष्ट रूप से जाना जाता है,
साथ ही यह ध्यान आकर्षित करने के लिए विशेष रूप से उच्च स्वर
में दूसरे पक्षियों की आवाज निकालते है, इन्ही कारणों से इनकी आवाज
से धोखा खाकर अन्य पक्षी भी इनकी ओर आकर्षित होते है, जिससे
भांगराज अन्य पक्षियों के झुंड में जाकर उनके आहार को
अपना आहार बना लेते है।

GREATER RACKET TAILED DRONGO

सच है कि जंगल में बाघ को एक चिड़िया सदा परेशान करती रहती है। इसका नाम है भृंगराज। इससे बाघ ही नहीं शेर, चीते, तेंदुए वगैरह मांसभक्षी जानवर बहुत परेशान रहते हैं। परेशानी की तो बात ही है जब भी ये जानवर अपने शिकार पर निकलते हैं तभी यह उनके साथ-साथ या आगे-आगे शोर मचाते चलने लगते हैं, जिससे हिरण, नीलगाय वगैरह समझ जाते हैं कि उनका शिकारी आसपास है और वे चौकन्ने हो जाते हैं। इसकी इसी खूबी के कारण देश के कई हिस्सों में इसे कोतवाल, यानि पहरेदार, कह कर भी जाना जाता है।

क्रिमसन सनबर्ड

CRIMSON SUNBIRD

इनके रंग रूप की तरह इनके घोसले भी लोगों को इनकी ओर आकर्षित करते है, इनके घोंसले की बनावट थैलीनुमा होती है, जो कि घास, मोस घांस व जटों से बनी होती है। इनके शरीर में सबसे मुख्य होती है इनकी जीभ जिससे यह फूलों का रस पीतें है।

पैसिफिक गोल्डन प्लोवर

इस वर्ष यह पक्षी सबसे पहले
बेलौदी बांध में पहुँचने वाले
पक्षियों में से एक है।

PACIFIC GOLDEN PLOVER

यह एक प्रवासी समुद्री पक्षी है
जो अलास्का और साइबेरिया में गर्मियों के दौरान प्रजनन करता है।
नॉनब्रीडिंग सीजन के दौरान, यह मध्यम आकार का प्लोवर व्यापक
रूप से प्रशांत क्षेत्र में प्रवास करता है।

गौरैया

HOUSE SPARROW

शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की वजह से आज गौरैया शहरों में कम ही दिखाई पड़ती है लेकिन गांवों में आज भी ये आसानी से दिखाई पड़ जाती है यही कारण है कि इसे किसान प्रेमी पक्षी भी कहा जाता है।

DurgForest

PADDYFIELD PIPIT

कोरोना काल में भले ही इंसानों की यात्रा मुश्किल हो गई हो लेकिन दुनिया भर के परिंदों ने सुदूर देशों की यात्रा शुरू कर दी है। धान का पिपिट या ओरिएंटल पिपिट (एंथस रुबलफुलस) पिपिट और वाग्लेट परिवार में एक छोटा पासराइन पक्षी है। पिपिट आकार में छोटे व पतले होते हैं। इनका आकार पांच से नौ इंच तक होता है। नुकीली चोंच, नुकीले पंख और लंबे पैरों के बड़े पंजे पिपिट की मुख्य पहचान हैं। यह खुले मैदानों में, कीटों को खाते हुए और जल्दी जल्दी चलते हुए दिखाई देते हैं। यह जमीन पर ही अंडे देती हैं और अंडों की संख्या छह तक होती है।

BRAHMINY STARLING

ब्राह्मणी मैना या पूहई (Brahminy starling) चिरइन की मैना परिवार की सदस्य पक्षी है। ये पक्षी पेड़ो की खोह और पाइप्स में अपना घर बनाती है। नर और मादा दोनों मिलकर घोंसला बनाते हैं। ब्राह्मणी स्टर्लिंग कीड़े, बीज और फल खाती हैं। इस पक्षी की आवाज़ आप तालपुरी जैव विविधता पार्क (दुर्ग वनमंडल के अंतर्गत) में सुन सकते हैं। इस छोटी सी चिड़िया का कोलाहल और प्रकृति का अनुपम दृश्य देखने के लिए पर्यटक तालपुरी जैव विविधता पार्क आते हैं ।

DurgForest

एशियन ओपनबिल स्टॉर्क

ASIAN OPENBILL STORK

एक ऐसा पक्षी जिसे ग्रामीण देवदूत मानते हैं। ये पक्षी अच्छी बारिश और फसल का संकेत देते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि इन पक्षियों के आने से अच्छी फसल और अच्छी बारिश होती है। प्रजनन के लिए यह पक्षी प्रायः उन स्थानों की तलाश करते हैं, जहां पानी और पर्याप्त आहार की उपलब्धता हो। छत्तीसगढ़ में यह पक्षी प्रायः महानदी और उनकी सहायक नदियों के आसपास के गांवों में देखे जाते हैं। छत्तीसगढ़ के ऐसे करीब 10 से 12 गांव है जहां ये पक्षी देखे जाते हैं। आप इन्हें तालपुरी जैव विविधता पार्क (दुर्ग वनमंडल के अंतर्गत) में देख सकते हैं।

ASHY PRINIA

Ashy Prinia या Ashy Wren-Warbler (प्रिनिया सोशलिस)
एक छोटी गाने वाली चिड़िया है।
यह चिड़िया भारतीय उपमहाद्वीप, पश्चिमी म्यांमार और श्रीलंका में पाया जाता है।
Ashy Prinia की आवाज़ आप
तालपुरी जैव विविधता पार्क (दुर्ग वनमंडल के अंतर्गत) में सुन सकते हैं।

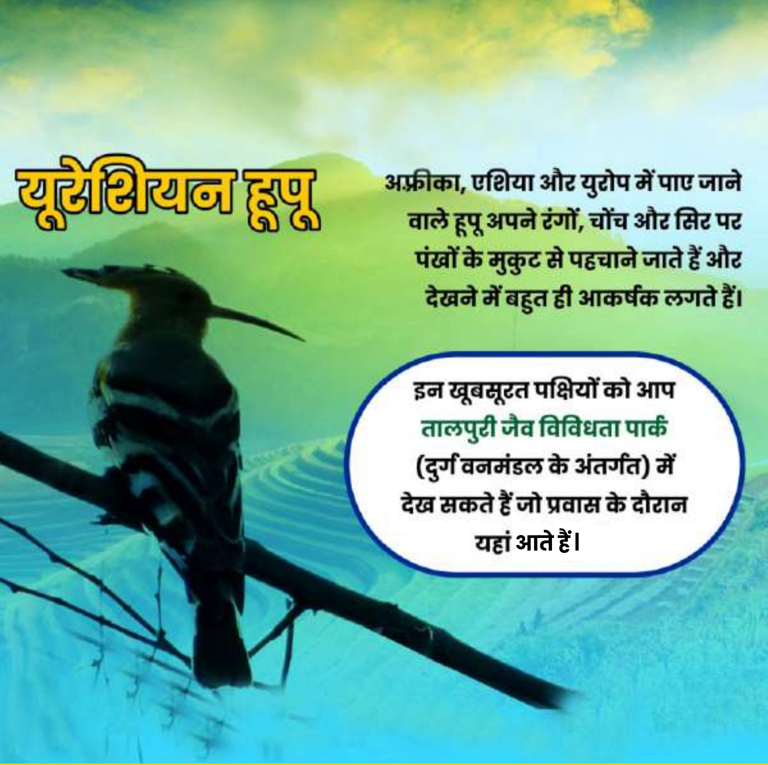

EURASIAN HOOPOE

अफ्रीका, एशिया और युरोप में पाए जाने वाले हूपू अपने रंगों, चोंच और सिर पर पंखों के मुकुट से पहचाने जाते हैं और देखने में बहुत ही आकर्षक लगते हैं। इन खूबसूरत पक्षियों को आप तालपुरी जैव विविधता पार्क (दुर्ग वनमंडल के अंतर्गत) में देख सकते हैं जो प्रवास के दौरान यहां आये हुए हैं।

CHESTNUT-SHOULDERED PETRONIA

येलो-थ्रोटेड गौरैया या चेस्टनट-शॉल्डरेड पेट्रोनिआ (Gymnoris xanthocollis) दक्षिणी एशिया में पाई जाने वाली गौरैया की एक प्रजाति है। यह सिर्फ जंगल और खेतों में निवास करते हैं। रहवासी क्षेत्रों में ये कम देखने मिलती है। इनके गले का निचला हिस्सा पीले रंग का होता है इसलिए इसे यलो थ्रोटेड स्पैरो कहते हैं।

SCAN THIS QR CODE TO VISIT WETLANDS OF FOREST DIVISION DURG

Belodi Dam

Chicha

Murkuta

Parsada

Talpuri

Achanakpur

Santara

DurgForest

Scan This QR Code To Visit Our Page

Facebook

Twitter

Instagram

Gidhwa Parsada Bird - festival

Coming Soon...

DurgForest

दुर्ग वनमंडल (छ.ग.)